- घरेलू आपूर्ति के पूरक के लिए।

[29/08/23] New

2) [Finacial Market
वित्तीय बाजार]

- वित्तीय बाजार में दो व्यक्तियों का मिलन होता है। एक जिसके पास अधिशेष मुद्रा है एवं वह अपनी मुद्रा को निवेश करना चाहता है।

दूसरा व्यक्ति जिसके पास कम मुद्रा है एवं वह उधार लेना चाहता है।

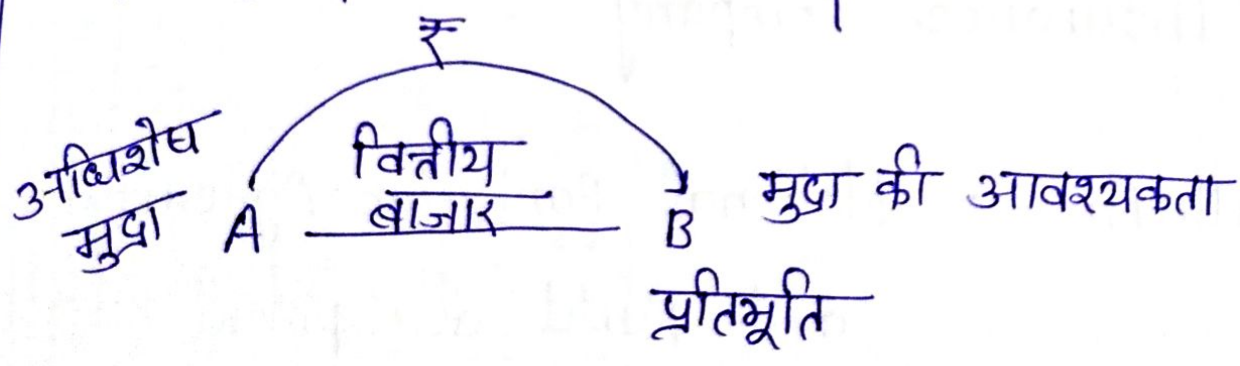

- इस बाजार में वित्तीय परिसंपत्तियों या प्रतिभूतियों को खरीदने एवं बेचा जाता है।

⇒ वित्तीय बाजार में शामिल पक्ष / भागीदारी
Parties Involved in finencial Market

- भारत सरकार
- RBI
- SEBI - Security and Exchange Board of India.
  भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड
- Bank
- Indisivable/ Trust
- NBFCs - Non Banking finance Companies
- Corporate
- Big Bussiness
- Insurance Company

NABARD - National Bank for Agriculture and Rural development

SIDBI -

वित्तीय बाजार के प्रकार

वित्तीय विनियमन	समय अवधि	दावे की प्राकृति	संगठनात्मक संरचना	निपटान का आधार
संगठित और असंगठित	मुद्रा बाजार Money Market पूंजी बाजार Capital Market	इक्विटी बाजार Share Market ऋण बाजार Loan/Debt	एक्सचेंज ट्रेडस ओवर द कांउटर	हाजिर बाजार Spot Market वायदा बाजार future Market

वित्तीय बाजार

संगठित — Organised

- RBI
- SEBI

+ यह वह बाजार है जहाँ वित्तीय लेन-देन नियम और कानूनों के ~~अध~~ अधीन होता है।

गैर संगठित — Unorganised

- family
- friend
- sahukar
- zamindar
- Relative

+ इसमें वित्तीय लेन-देन हेतु कोई नियम कानून नही होते।

[संगठित वित्तीय बाजार]

मुद्रा बाजार — Money Market	पूंजी बाजार — Capital Market
- यह वह बाजार है जहाँ वित्तीय परिसंपत्तियां प्रतिभूतियों को अल्पकालीन समय के लिए खरीदा एवं बेचा जाता है।	- इसमें दीर्घकालीन प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय होता है।
	- 1 वर्ष से अधिक
- एक वर्ष से कम = 364 day	- इसका विनियामक SEBI है।
विनियामक RBI है।	
- अधिक तरल	- कम तरल

- कम जोखिम
- Over the Counter
- यह और संगठित एक प्रकार से है।

- ज्यादा जोखिम
- Exchange trade
- यह पूर्व संगठित है।

[मुद्रा बाजार Money Market]

- अल्पकालीन प्रतिभूतियों से संबंधित है।
- 1 वर्ष से कम (अर्थात् 364 दिनो तक)
  RBI द्वारा विनियामक

[मुद्रा बाजार के उपकरण]

- वाणिज्यक प्रपत्र (commerical Bill / Paper 1990
- राजकोष विपत्र (Treasury Bill (T-Bill)
- नगद प्रबंध विपत्र (Case management Bill)
- आर्थोपाय अग्रिम (wage and means Advances WMA)
- विनिमय का बिल / विपत्र (Bill of Exchange)
- जमाओं का प्रमाण पत्र (Certificate of Deposit)
- पुन: क्रय समझौता (Repurchange Agreement)

- Collateralised Borrowing s langing obligation (CBLO)
- कॉल मुद्रा (Call money)
- नोटीस मुद्रा (Notice Money)
- सावधी मुद्रा (Term Money)

[4/09/23]

Commerical Paper
वाणिज्यक प्रपत्र

Issued by :- i) प्रतिष्ठित, कम्पनीयाँ।
जरीकर्ता बड़े निगम

ii) प्राथमिक (Primary dealer) -
जिन्हे RBI सरकारी प्रतिभूतियाँ को खरीदने या बेचने का लाइसेंस देता है।

iii) अखिल भारतीय संस्थान (All India financial Institution).
NABARD, SIDBI, NHB, EXIM, NaBFID

a.) समय अवधि (Time period)
न्यूनतम - 7 day
अधिकतम - 364 day

b.) राशि (Amount) 5,00,000 के गुणांक में

c.) यह 1990 में प्रारंभ हुआ।

d.) यह एक असुरक्षित वचन पत्र है।

e.) यह अंकित मूल्य में बट्टे (Discount) पर जारी होता है, लेकिन अंकित मूल्य पर वापस होता है।

→ Short term Instrument of Govt. for Borrowing Money.

(सरकार के अल्पकालीन उपकरण ऋण के लिए

Treasury Bill T-Bill राजकोष विपत्र	Cash Management Bill (CMB) नगद प्रबंधन विपत्र	Ways Means Advances (WMA) अर्थोपाय अग्रिम

Treasury Bill :—

- केवल केन्द्र जारी कर सकता है।
- यह सरकार के स्थान पर RBI द्वारा जारी होता है।
- यह व्यक्तियाँ फर्म / कम्पनियाँ, Trust, Bank, बिमा कम्पनियाँ आदि द्वारा खरीदा जा सकता है।

91 day - जनवरी 1993

182 day - नवम्बर 1996

364 day - अप्रैल 1992

- पहले 91 दिन का एक Adhoc Treasury Bill जारी होता था, लेकिन अप्रैल 1997 में बंद हो गया।
- राज्य सरकार इसे जारी नहीं कर सकते है।
- यह अंकित मूल्य पर बट्टे (discount) पर जारी होता है लेकिन अंकित मूल्य पर वापस होता है।

- Amount राशि 25000 गुणांक में है।
  यह बैंक के द्वारा SLR के रूप में रखा जा सकता है।
- Treasury Bill शून्य कूपन प्रतिभूति होती है।
- T-Bill को Gilt edge security भी कहते हैं।
  (अत्यधिक सुरक्षित एवं अत्यधिक तरल)

⇒ Cash Managment Bill
  (नगद प्रबंधन विपत्र)

- 2010 में प्रारंभ हुआ है।
- यह सरकार की ओर से RBI द्वारा जारी होता है।
- यह 91 days से कम समय के लिए जारी किये जाते हैं एवं ये और मानक होता है, क्योंकि इनका कोई निश्चित समय अवधि नही है।
- यह राजकोष विपत्र के समान होते हैं।
- अंकित मूल्य से कम पर जारी होता है लेकिन अंकित मूल्य पर वापस होता है।
- यह SLR के रूप में Bank रख सकती है।

Ways & Means Advances
आर्थोपाय अग्रिम

- यह 1997 में प्रारंभ हुए।
- यह RBI अधिनियम 1934 के खंड 17(5) में शामिल होते है।
- ये केन्द्र एवं राज्य सरकार जारी कर सकती है।
- जब सरकार के व्यय राजस्व से अधिक हो जाते है, तब WMA का प्रयोग करते है।
- इसके अंतगर्त यदि 90 दिन से कम का ऋण लिया जाता है तो Repo Rate पर होता है। (बराबर होता है)
- यदि ये 90 दिन से अधिक होता है तो Repo Rate के 2% प्रतिशत जारी होता है।

5/09/23

~~Cerf~~ Certificate of Deposite

जमाओ का प्रमाण पत्र

जारीकर्ता :- Bank एवं RBI कुछ चयनित अखिल
Issue

भारतीय वित्तीय संस्थानो को एक वर्ष से तीन वर्ष तक जारी करने की अनुमति देती है।

- यह 1989 में प्रारंभ हुआ।
- यह एक निगोशिएबल एवं असुरंक्षित उपकरण (Negotiable Instrument) है।
  हस्तांतरीत
- यह सभी वाणिज्यक बैंक एवं RRB के द्वारा जारी होता है।
  RRB = क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
  4 June 2021 से
- राशि 5 लाख एवं उसके गुणांक में।
- पहले यह राशि 1 लाख था।
- समय अवधि न्यूनतम 7 day, अधिकतम 364 day.
- यह FD के समान है लेकिन CD में कुछ अंतर है।

FB	CB
- Non-Negotiable	- Negotiable
- इसको रखकर लोन ले सकते है।	- इसको प्रतिभूति के रूप में रखकर ऋण नही ले सकते है।
- अधिकतम 10 साल है।	- अधिकतम 364 day.

Bill of Exchange / Commerical Bill

(विनिमय बिल / वाणिज्यक विपत्र)

- यह 1990 में प्रारंभ हुआ।
- इसके द्वारा एक व्यापारी दूसरे व्यापारी से उधार पर वस्तुएं खरीदता है अर्थात् यह लेनदार से देनदार को एक निश्चित अवधि के बाद एक विशिष्ट राशि का भुगतान करने का एक लिखित आदेश है।
- इसे लेनदार द्वारा sing किया जाता है।

Promiser Note	Bill of Exchange
- यह भुगतान करने का बिना शर्त के एक वादा है।	- यह बिना शर्त के भुगतान करने का एक आदेश है।
- वचन अदा करता देनदार	- आदेश करता लेनदार

Repurchace Agreement
(पुनर्क्रय अनुबंध)

⇓

Repo & Reverse Repo

LAF

- यह दो व्यापारियों के बीच होने वाला एक अनुबंध है। जिसमें किसी जमा की गई प्रतिभूति का पुनर्क्रय होता है।

Inter Bank Borrowing
(अंतर बैंक ऋण)

Collateralised
सपार्श्विक

- CBLO → CCIL
  भारत में CBLO का संचालन CCIL के द्वारा होता है।

Non-Collateralised
गैर संपार्श्विक

Call Money	Notic Money	Term Money
⇓	⇓	⇓
1 day	2-14 day	14-364 day

- CBLO - Collateralized Borrowing and landing obligation.
- CCIL - Clering corporation of India limited.

[6|9|23]

Capital Market
(पूंजी बाजार)

- यह वह बाजार है, जिसमें दीर्घकालीन पूंजी को प्राप्त किया जाता है।
- इस बाजार में अर्जित पूंजी का निम्नलिखित प्रयोग होता है।
    - सरकार की परियोजनाओं के लिए Road, बाँध, Hospital, मेट्रो etc.
    - कंपनीयों के लिए - भूमि, इमारतें, मशीन
- इस पूंजी बाजार का विनियामक SEBI होता है।

- Equity
    - Equity (समता अंशपत्र)
    - Preference (अधिमान अंश पत्र)
- Debt (ऋण)
    - Debentures (ऋण पत्र)
    - Bonds
- Derivaties (व्युत्पन्न)
- Mutual funds

Shares (अंशपत्र)

- किसी कंपनी की कुल पूंजी का सबसे छोटा हिस्सा।
- कुल पूंजी - 1,00,00,000
  कुल shares की संख्या 1,00,000
- कंपनीयाँ अपने share को पूंजी प्राप्त करने हेतु जारी करती है।
- सभी share धारक कंपनी के मालिक होते हैं।

Dividend (लाभांश)

- यह लाभ का वह हिस्सा है जो वे कंपनी सभी शेयर होल्डर को बराबर बाँटती है।

Types of shares
(अंशपत्र के पत्र)

Equitey share	Deference shares
- यह लाभांश के पूर्व निश्चित दर पर जारी नही होता है।	- यह लाभांश के पूर्व निश्चित दर पर जारी होता है।
- कंपनी के बंद/ दिवालियाँ होने पर इन्हें अधिमान अंशधारक के बाद पैसा दिया जाता है।	- यह समता अंशपत्र धारको से पहले पैसा प्राप्त करते है।
- यह Annual General meeting (वार्षिक समान्य बैठक) में भागीदारी होते है।	- यह वार्षिक समान्य बैठक में भागीदारी नही देते है।
- हानि में भागीदारी करते है।	- यह हानि में भागीदारी नही करते है।
- इन्हे मताधिकार होता है।	- इन्हें मताधिकार नही होता है।

Types of Capital Market

i) अधिकृत पूंजी (Authorised Capital)

वह पूंजी जिसे किसी कंपनी का पंजीकरण होता है एवं कोई कंपनी अधिक से अधिक पूंजी तक के शेयर जारी कर सकती है।

ii) जारी पूंजी (Issued Capital)

- वह पूंजी जिसे राशि के शेयरस एक कंपनी द्वारा बेचने के लिए जारी किये जाते है।
- यह अधिकृत पूंजी का हिस्सा है।

iii) अभिदत्त पूंजी (Subscribed Capital)

वह पूंजी जो निवेशक shares को खरीदना चाहते है।

iv) प्रदत्त पूंजी (Paid up capital)

वह पूंजी जो कंपनी shares को बेचकर प्राप्त करती है।

कंपनीयों के प्रकार

Pvt Ltd (Private Limited)	Public Ltd
- कंपनी अधिनियम 1956/2013 के अंतगर्त पंजीकृत होते है।	- वह कंपनी जो अपने shares (Public) लोगों को बेचती है।
- Member → Min - 2, Max^m - 200	- Member → Min - 7, Max^m = No limit
- निर्देशकों की संख्या Minimum - 2	- निर्देशकों की संख्या Minimum - 3

→ IPO - Initial Public offering
पहली बार कंपनी shares बेचती है।

→ FPO - follow on Public offer
दूसरी बार कंपनी। बार-बार कंपनी अपना shares बेचती है।

Capital Market
पूंजी बाजार

[7/09/23]

Primary Market प्राथमिक बाजार	Secondary Market द्वितीय बाजार
New issue Market नया share बाजार	old issue Market Already issue share पुराना शेयर बाजार
- इस बाजार में कंपनीयाँ नये शेयर जारी करती है।	- इस बाजार में पहले से ही जारी शेयरो को निवेशक आपस में खरीदते एवं बेचते है।
- निवेशक :- Banks, अन्य वितीय संस्थान, इंसोरेंस कंपनी	- निवेशक Broker की सहायता से खरीदते एवं बेचते है।
- सिर्फ shares को कंपनीयाँ द्वारा बेचा जाता है।	- shares को खरीदा एवं बेचा जाता है।
- कोई भौगोलिक क्षेत्र नही होता।	- भौगोलिक सीमा क्षेत्र होता है।
- shares की कीमत कंपनी तय करती है।	- shares की कीमत बाजार की सैन्य अर्थात मांग आपूर्ति।
- IPO एवं FPO की सहायता से shares को बेचा जाता है।	

- shares बाजारों की सहायता से shares को खरीदा एवं बेचा जाता है। जैसे - BSE, NSE

Investor (निवेशक)
- Trading A/c
- Demat A/c
  - Depositories → NSDL, CDSL

⇒ प्राथमिक बाजार में शेयरों को जारी करने की विधियाँ :—

IPO Intial Public Offering	FPO Follow on Public Offer
जब कोई कंपनी पहली बार share बाजार में पंजीकृत हो एवं अपने share को जारी करे।	- जब एक कंपनी अपने संम्पूर्ण जीवन काल में अतिरिक्त पूंजी प्राप्त करना चाहती है तब FPO का प्रयोग करती है।

⇒ FPO

- Private Placement
जब कम्पनी पहले से ही चयनित लोगों को अन्य कंपनीयों, किसी बैंक आदि को share जारी करे।

- Right issue = जब कंपनी अपने पूर्व अंश धारकों को कुछ अतिरिक्त shares जारी करें।

- Sweat Equity :- जब कोई कंपनी अपने कुछ मुख्य लोगों को share जारी करती है जैसे :- निर्देशक।

Investor (निवेशक)

Trading A/c	Demat A/c
Broker	Depositories (निक्षेप निधि) → NSDL, CDSL

- National Security Deposite limited
↳ 1996
Promoted by NSC and NIDB

⇒ CDSL (Central Depositries services limited
स्थापना = 1999
promoted by BSE

[8|09|23]

⇒ Equity एवं DEBET के बीच अंतर :—

Equity (समता)	Debt (ऋण)
- यह कंपनीयो के शेयरों पर निवेश है।	- यह एक प्रकार का कंपनीयो को दिये जाने वाला लोन है।
- निवेश पर स्वामित्व होता है।	- निवेश पर स्वामित्व नही होता।
- High Risk	- Low Risk
- लाभांश	- Interest
- इस पर अनियमित (रिटर्न) प्रतिफल मिलता है।	- नियमित एवं निश्चित प्रतिफल
- कंपनी के दिवालियाँ होने पर Equity निवेशको को ऋण निवेशको के बाद पैसा मिलता है।	- कंपनी के दिवालियाँ होने पर dept निवेशको को ऋण निवेशको।
- यह ऋण में परिवर्तित नही हो सकती है।	- यह ऋण में परिवर्तित हो सकता है।
- लाभांश पर कर माफ नही होता है।	- ब्याज पर कर माफ हो सकता है।

Bond एवं Debentures में अंतर
(ऋण पत्र)

Bond	Debentures
- यह एक ब्रिटिश शब्द है।	→ यह एक अमेरिकन शब्द है।
- यह बड़े निगम, सरकार (Private Company) वित्तीय संस्थान आदि जारी कर सकते है।	→ यह निजी कंपनीयो द्वारा जारी होते है।
- Low Interest	→ अधिक जोखिम
- अत्यधिक दीर्घकालीन होते है।	→ ये कम सुरक्षित होते है, क्योंकि इनमें सपाश्र्वक की आवश्यकता नही होती है।
- कम जोखिम	→ High Interest Rate
- ये अधिक सुरक्षित होते है, क्योंकि इनमें सपाश्र्वक की आवश्यकता होती है।	

Bond

Coupon Bond कूपन बॉंड	Zero Coupon Bonds (शून्य कूपन बॉंड)	Bearer Bond (धारक बांड)
यह निर्धारित ब्याज दरो पर जारी होते है।	यह अंकित मूल्य से कम पर जारी होते है तथा अंकित मूल्य पर वापस होता है।	- इस Bond पर किसी व्यक्ति का नाम नही होता एवं इसको एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच हस्तानंतरित करते है।

⇒ परिवर्तनीय बांड :-

- यह शेयर में परिवर्तित हो सकते है।
- मुद्रास्फीति के समय yeild

→ Bond की कीमतो yeild (आय)/प्रतिफल एवं ब्याज के बीच संबंध।

$\boxed{BP\uparrow \; y\downarrow} = -ve$

BP =

विभिन्न प्रकार के Bonds :-

⇒ Junk Bond :-

यह बांड वह ऋण होता है, जिसे कम credit Rating वाली कंपनी जारी करती है, अर्थात् यह Bond जोखिम भरे होते है।

⇒ प्रतिदेय Bond (Redeemable) :-

यह वे Bond है, जो नियमित ब्याज देते है, एवं Maturity पर मूलधन वापस करते है।

⇒ गैर - प्रतिदेय (Non- Redeemable) :-

केवल ब्याज का भुगतान करते है, मूलधन वापस नहीं करते।

⇒ मुद्रास्फीति अनुक्रमित बांड (Inflation Index Bond) :-

इसमें मूल रकम मुद्रास्फीति की दर से परिवर्तित होता है एवं ब्याज दर समान रहता है।

⇒ Soverign Gold Bond :-

- 2015 में प्रारंभ किया गया।
- सोने के ग्राम में अंकित होता है।
- व्यक्तियों के लिए 1gm - 4kg तक।

- संस्थाओं के लिए 1 gm - 20 kg तक

- इन Bonds की कीमतें मुंबई आधारित India Bullian & Jwellers Association तय करता है।

⇒ नगर-पालिका Bond 1997 से प्रारंभ :-

- इसमें शहरी स्थानीय निकाय, जनता से पैसा उधार लेती है।

- इसमें शहरी स्थानीय निकाय जनता से पैसा उधार लेती है।

- निवेश राशि एवं ब्याज पर कर माफ होता है।

⇒ कंगारू बांड - 2018 से :-

- पहला Block-chain आधारित bond है।

- इसे Bond-i भी कहते हैं।

- इसे Ethereum Block-chain तकनीकि का प्रयोग करके Austialia में बेचा गया।

⇒ BRICS Bond :- 2014 में :-

- NDB (New Development Bank) BRICS राष्ट्रों द्वारा बनाया गया, जिसका मुख्यालय शंघाई में है।

- इसने अपने बुनियादी ढांचे के लिए BRICS Bond जारी किये।

⇒ मसाला बांड :-

- विदेशों में जारी होते हैं।
- भारतीय मुद्रा में अंकित होते हैं।
- विश्व का पहला मसाला बांड IFC (International Finance Corporation) विश्व बैंक समूह ने 2014 में जारी किया।

- 2015 में RBI ने भारत की कंपनीयों को मसाला बांड जारी करने के लिए सहमति दी।

- 2019 में केरल ने सर्वप्रथम मसाला Bond जारी किया।

⇒ अन्य मसाला बांड :-

Dim Sum Bond = हांगकांग

Komodo Bond = Indonesia

सामुराई Bond = जापान

- पांडा बांड ⇒ China
- ~~मसाला~~ महाराजा Bond = India.
- Kangaroo Bond = Austrialia.

⇒ Green Bond :-

- निश्चित आय वाला बांड।
- इसे विशेष रूप से स्वच्छ परिवहन, सतत जल-प्रबंधन जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, ऊर्जा-दक्षता आदि के लिए जारी किये जाते है। इसे World Bank निगमों एवं सरकार के द्वारा जारी किया जाता है।
- बीमा कंपनीयाँ, Mutual fund company, पेंशन fund campany आदि करती है।
- 2007 में विश्व बैंक द्वारा Green bond जारी किया गया।
- 2015 में yes Bank द्वारा भारत में पहली बार जारी।
- 2016 में Brics Bank (NDB) ने युआन में।
- 2018 में भारतीय अक्षय ऊर्जा Agency (IREDA) ने London stock Exchange में भारत का पहला मसाला ग्रीन Bond जारी किया।

⇒ Blue Bond :—

- समुद्र और महासागर आधारित परियोजनाओ के वित्त-पोषण के लिए।

- इसे सरकार, विकास बैंको आदि द्वारा किया जाता है।

- यह एक प्रकार का Green Bond का उप-प्रकार है।

- शिचिल्स ने अपनी समुद्री संरक्षित क्षेत्रों और मत्स्य पालन क्षेत्र का विस्तार करने के लिए 2018 में दुनिया का पहला blue Bond जारी किया।

⇒ Elephant Bond :—

- यह सुर्जीत भल्ला की अध्यक्षता में व्यापार-नीति पर एक उच्च स्तरीय सलाकार समूह के द्वारा सुझाव दिया गया ~~है~~ था।

- यह 25 वर्षीय Svereign Bond है।

- यह भारत में काले धन की वसूली हेतु प्रारंभ किया गया था।

- इन Bond से प्राप्त राशि बुनियादी ढाँचा परियोजनाओ के वित्त-पोषण के लिए किया जाता है।

⇒ Cat Bond – Catestrophe :–

- इन्हें Catestrphe बांड भी कहते हैं।
- आम-तौर पर सरकार एवं बीमा कंपनीयाँ जारी करती हैं।
- यह बड़ी-बड़ी प्राकृतिक आपदओं (तूफान, भूकम्प) के मामले में वित्तीय सुरक्षा हेतु जारी किया जाता है।

⇒ Social Impact Bond :–

- उच्च मिवल मूल्य वाले व्यक्तियों (High Net Worth Indivisual) को जारी होता है।
- सामान्यत: 5 वर्ष की अवधि
- 2019 में SIDIBI ने ₹ 300 Cr जारी किये।
- इनका प्रयोग महिलाओं की आजीविका सुधारने हेतु होता है।

⇒ Electooral Bond :–

- बजट – 2017 में घोषित।
- SBI द्वारा जारी किया जाता है।
- 15 दिनों के लिए।

* बांड की कीमतो मूल्य और प्रतिफल का संबंध

point A :-

i) बांड की कीमतो एवं yeild के बीच का संबंध।

ii) yield (प्रतिफल) = $\frac{\text{bond Coupon}}{\text{bond price}} \times 100$

eg :- $\frac{200}{1000} \times 100 = 20\%$

$y = 20\%$

$y_1 = \frac{200}{5000} = 4\%$

$y = 4\%$

→ जब बांड की कीमत बढ़ती है, (1000 से 5000) तब बांड से प्राप्त होने वाले प्रतिफल (yeild) 20% से 4% हो जाती है। अर्थात बांड की कीमतों एवं बांड के यील्ड के बीच नाकारात्मक संबंध है।

b.) बांड की कीमतो एवं बांड के ब्याजो के बीच संबंध :-

जब नए बांड मँहगे ब्याज दरों पर जारी होते है, तब लोग पुराने बांड की माँग कम करते है जिसके परिणाम स्वरूप बांड की मांग कम हो जाती है।

[12|09|23]

Derivatives (व्युत्पन्न)

- Forward
- futures
- options
  - Call option
  - put option
- Swaps
  - Interest Rate Swap
  - Currency Swap

Derivative Market

- OTC (over the counter) Derivatives Market
  - Forwards
  - Swaps
- Exchange-Traded Derivatives Market
  - Futures
  - options (Buyer)

⇒ Derivatives (व्युत्पन्न)

यह एक भविष्य का वित्तीय अनुबंध (Contract) है जो दो पार्टीयो के बीच होता है एवं जिसका मूल्य एक या एक से अधिक मूलभूत परिसंपतियो (underline Assert) से तय होता है।

⇒ मूलभूत परिसंपतियाँ निम्न प्रकार की होती है।

a.) share

b.) सूचकांक

c.) Currency

d.) वस्तु

→ व्युत्पन्न भविष्य में होने वाले कीमतो में उतार - चढ़ाव अर्थात अनिश्चित से बचाते है।

→ व्युत्पन्न के प्रकार :-

i) forward (वायदा)

यह एक निश्चित कीमत और तिथि पर किसी विशिष्ट परिसंपति को खरीदने या बेचने के लिए दो लोगो के बीच एक वित्तीय अनुबंध है।

- यह गैर- मानकृत होता है।
- यह हैंजीग से संबंधित है अर्थात इस अनुबंध को जोखीम से बचाया जा सकता है।
- इनका विनियम नही होता है।

ii) future :-

- यह forward के समान होते है।
- यह किसी एक निश्चित तिथि और कीमत पर किसी विशिष्ट परिसंपत्ति को खरीदने, बेचने से संबंधी एक भविष्य वित्तीय अनुबंध है।
- यह मानकृत होते है।
- यह विनियम व्यापारीक (Exchange Trade) होते है।

iii) options :-

- यह क्रेयताओ (buyer) से संबंधीत है।
- यह वह अनुबंध है जो खरीदार को किसी एक निश्चित अवधी के दौरान एवं एक निश्चित कीमत पर मूलभूत परिसंपति को खरीदने या बेचने का अधिकार देता है।

Call option
खरीदने से संबंधित

put option
. बेचने से संबंधित

iv) Swaps :- (विनिमय)

यह दो पार्टियो (पक्षों) के बीच भविष्य को लेकर एक अनुबंध है जो नगदी प्रवाह को विनिमय करने के लिए होता है।

- यह Over the counter होता है।

Swaps

- Currency Swaps
- Interest Rate Swaps.

→ व्युत्पन्न बाजार में निवेशकों के प्रकार :-

a.) हैजर :-

↳ जोखिम न लेने वाले निवेशक एवं जोखिम को कम करना हैजिंग कहलाता है।

- जब लोग future में होने वाले Risk को कम करें।

b.) Speculator (सट्टेबाज)

↳ जोखिम लेने वाला निवेशक

- जब भविष्य में कीमतों के परिवर्तन के आधार पर लाभ कमाने के उद्देश्य से लेन-देन करते है जो सट्टेबाजी कहलाता है।

speculator

Bull (तेजड़िया)	Bear (मंदड़िया)
वह निवेशक जो तब निवेश करता है जब shares का दाम बढ़ते है।	वह निवेशक जो तब निवेश करता है जब shares का दाम घटते है।

c.) Arbitrageur (मध्यस्थता) :-

वह निवेशक जो किसी एक बाजार में किसी प्रतिभूति को सस्ते में खरीदता है एवं दूसरे बाजार में उसी प्रतिभूति को महँगे दाम में बेचता है।

[Mutual funds]

यह एक वित्तीय उपकरण है जिसमें कई सारे निवेशक धन को एकिकृत करके किसी एक पेशेवर प्रबंधक AMC (Assert mangement Company) को दे देते है एवं निवेशको के बदले वह AMC उनके पैसे को कंपनियो के Shares, Bond, Gold आदि में निवेश करती है।

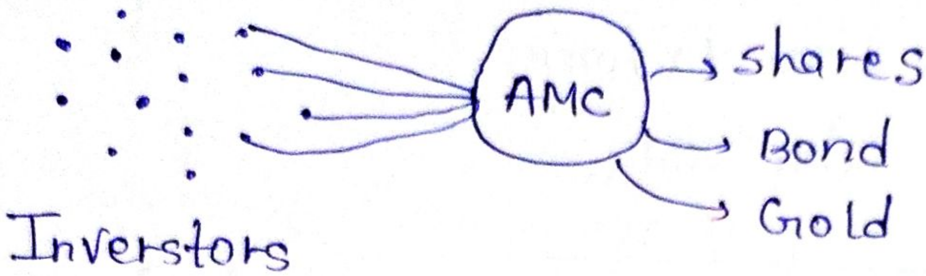

⇒ Mutual fund के प्रकार :-

i) Equity Mutual fund → shares (निवेश होगा पैसा)

ii) Debt / fixed Income Mutual fund → Bonds

iii) Hybrid Mutual fund → shares, Bonds

iv) Solution oriented Mutual funds.

→ यह किसी विशेष उद्देश्य के लिए निवेश है।
जैसे - बच्चे के शिक्षा के लिए निवेश,
Retirement planning.

[13/09/23]

Stock Exchange
शेयर बाजार

Bombay Stock Exchange (BSE)

- स्थापना = 1875
- यह एशिया का सबसे पुराना बाजार है।
- पहले इसका नाम था, Native share Stock Broker Association.
- उच्च सूंची बंध कंपनियाँ → 30
- BSE का सूंचकांक है = SENSEX (Senstitive Index)
- Chairman = S.S Mundra
- M.d , CEO = Sundaraman Ramamurthi

National Stock Exchange (NSE)

- स्थापना = 1992
- वर्तमान में यह भारत का सबसे बड़ा शेयर बाजार है।
- मुख्यालय = मुंबई
- उच्च सूची बंध कंपनियाँ = 50
- NSE का सूचकांक = Nifty
- Chairman = गीरीश चन्द्र चतुर्वेदी
- M.d , CEO = आशीष कुमार चौहान

SENSEX

i) प्रारंभ हुआ जनवरी 1986 में ।

ii) आधार तिथि 1 April 1979 ।

iii) आधार मूल्य = 100
(Base price)

	1st April 1979	Base price	13 Sept. 2023
Tata	₹ 20	100	

⇒ NSE (National stock Exchange)

- आधार तिथि = 3 Nov. 1995
- Base price = 1000

⇒ विश्व के शेयर बाजार एवं उनके सूचकांक :-

→ BSE = SENSEX

→ NSE = Nifty

→ NYSE = Dow Jones

→ NASDAQ = NASD-100

→ China = composit Index

→ Japan = Nikkie

→ singapore = simex / strait times

→ france = CAC-40

→ Gemany = DAX

→ Pakistan = KSE-100

→ Russia = MOEX

→ south korea = kospi

→ Hong-kong = Hang seng

→ Europe = stoxx

→ london = FTSE-100

⇒ बाजार पूंजीकरण के आधार पर कंपनीयों के प्रकार :-

- Large captial Comany :-
- जिनकी बाजार पूंजीकरण 20 हजार करोड़ से अधिक हो।
- Mid-captial Company
  ↳ 5 हजार करोड़ से 20 हजार तक।
- Small captial Comany
  ↳ 5 हजार करोड़ से कम तक।

⇒ Blue chip Companies :-

- वह कंपनीयाँ जिनकी बाजार में Repution अच्छी होती है। अर्थात जो बड़ी कंपनी होती है एवं जिनका वित्तीय स्वास्थ्य अच्छा होता है
  (लाभ कमाने वाली कंपनी)

द्रुत निवेशकों (Angel Investors	उद्यम पूंजीदाता (Venture Capitalist
→ एंजेल निवेशक एक निवेशक है जो उद्यमियों को अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है।	→ एक उद्यम पूंजीपति एक निजी Equity निवेशक है जो Equity हिस्सेदारी के बदले उच्च विकास क्षमता प्रदर्शित करने वाली कंपनियों को पूंजी प्रदान करता है।
→ एंजेल निवेशक आमतौर पर एक उद्यमी के परिवार और दोस्तों के बीच लेकिन वे बाहर से भी हो सकते हैं। वे जो पूंजी प्रदान करते हैं, वह बीज धन (seed funding) का एक बार का इंजेक्शन हो सकता है या कंपनी को कठिन समय के माध्यम से ले जाने के लिए जारी समर्थन हो सकता है - बदले में वे व्यवसाय में खुद की हिस्सेदारी पसंद कर सकते हैं या ऋण के रूप में पूंजी प्रदान कर सकते हैं।	→ यह स्टार्टअप उपक्रमों को वित्तपोषित करना या छोटी कंपनियों का समर्थन करना हो सकता है जो विस्तार करना चाहते हैं लेकिन Equity बाजारों तक उनकी पहुँच नहीं है। → Venture Capitalist, Angle Investors के विपरीत व्यक्ति के बजाय कंपनी के लाभ में रुचि रखते हैं।

- वे आमतौर पर व्यवसाय की बजाय व्यक्ति में निवेश कर रहे होते है।	→ वेंचर कैपिटलिस्ट ऐसी कंपनियों में निवेश करने का जोखिम उठाने को तैयार है क्योंकि अगर ये कंपनियां सफल होती है तो वे अपने निवेश पर भारी रिटर्न कमा सकते हैं।
- निवेश योग्य पूंजी के अलावा, ये निवेशक तकनीकी सलाह प्रदान करते है।	
- वे अपने निवेश से भारी मुनाफा कमाने के बजाय व्यवसाय को सफल बनाने में मदद करने पर ध्यान केन्द्रीत करते है।	

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI)
(Securities and Exchange Board of India)

- यह 30 January 1992 को गठित एक वैधानिक संगठन (statutory body) है।

स्थापना = 12 April 1988

- यह भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड अधिनियम (SEBI Act), 1992 के तहत काम करता है।

- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) का प्राथमिक कर्तव्य प्रतिभूतियों में निवेशकों के हितों की रक्षा करना और प्रतिभूति बाजार (Security Market) को बढ़ावा देना और विनियमित (Regulate) करना है।

- इसका मुख्यालय मुंबई में है, अहमदाबाद, चेन्नई दिल्ली और कोलकता में इसके 4 क्षेत्रीय कार्यालय (Regional office) है।

→ SEBI अध्यक्ष = सुश्री माधबी पुरी बुच

⇒ SEBI के सदस्य :-

- अध्यक्ष = केन्द्र सरकार द्वारा मनोनीत
- केन्द्रीय वित्त मंत्रालय के दो अधिकारी सदस्य हैं।

- भारतीय रिजर्व बैंक का एक प्रतिनिधि होता है।
- भारत की केन्द्र सरकार शेष 5 सदस्यों की नियुक्ति करती है। 5 सदस्यों में से 3 को पूर्णकालिक काम करना चाहिए।

⇒ SEBI की शक्तियाँ और कार्य :—
(Powers and functions of SEBI)

- सेबी का उद्देश्य अपने वैधानिक नियमों और स्व- विनियमन व्यवसाय के बीच सामंजस्य स्थापित करके धोखाधड़ी की जाँच (to check fraudulence) करना भी है।
- यह बिचौलियों (Intermediaries) के लिए प्रतिस्पर्धी पेशेवर बाजार (Competitive professional Market) को भी सक्षम बनाता है।
- सेबी एक बाजार प्रदान करता है जिसमें जारीकर्ता (Issuers & Company) ठीक से वित्त बढ़ा सकते हैं।
- सेबी शेयरों के व्यापार का विश्लेषण करता है और सुरक्षा बाजार को अनाचार से बचाता है।
- यह स्टॉक ब्रोकर्स को नियंत्रित करता है।
- यह निवेशकों को उनके ज्ञान (Educating investors) को बढ़ाने के लिए बाजार के बारे में शिक्षा प्रदान करता है।

प्रतिभूति अपीलीय न्यायाधिकरण (SAT)
(Securities Appellate Tribunal)

→ SAT, SEBI अधिनियम, 1992 की धारा (section) 15k के प्रावधानों के तहत स्थापित एक वैधानिक निकाय (statutory body) है|

→ Securities Appellate Tribunal (SAT) की केवल एक बेंच है, जो मुंबई में बैठती है|.

→ यह वित्त मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र में है|

⇒ संघटन (Members) :—

- SAT में एक पीठासीन अधिकारी (presiding officer) और 2 अन्य सदस्य होते हैं|

- SAT के पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति केन्द्र सरकार द्वारा भारत के मुख्य न्यायाधीश या उनके नामित व्यक्ति के परामर्श से की जाएगी|

⇒ शक्तियाँ और कार्य (Powers and functions)

- इसमें वही शक्तियाँ हैं जो एक सिविल कोर्ट में निहित हैं| इसके अलावा, यदि कोई व्यक्ति SAT के निर्णय या आदेश से असंतुष्ट महसूस करता है तो उच्चतम न्यायालय में अपील कर सकता है|

→ सेबी अधिनियम, 1992 के तहत सेबी द्वारा पारित आदेशों के खिलाफ अपील सुनने और निपटाने के लिए।

→ पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (Pension fund Regulatory and Development Authority of India (PFRDA) द्वारा पारित आदेशों के विरुद्ध अपीलों को सुनना और उनका निपटान करना।

→ भारतीय बीमा विनियामक विकास प्राधिकरण (Insurance Regulatory and Development Authority of India (IRDAI) द्वारा पारित आदेशों के विरुद्ध अपीलों को सुनना और उनका निपटान करना।

⇒ Financial Action Task force (FATF):–

- G7 शिखर सम्मेलन के दौरान 1989 में स्थापित अंतर-सरकारी निकाय (Inter-governmental body)

- अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली (International financial System) की अखंडता के लिए मनी लॉन्ड्रिंग (Money Laundering), आतंकवादी वित्तपोषण (Terrorist financing) और अन्य संबंधित खतरों से निपटने के लिए

कानूनी, नियामक और परिचालन उपायों के कार्यान्वयन को बढ़ावा देना।

- सचिवालय (Secretariat) :- पेरिस में OECD का मुख्यालय।
- भारत 2010 में सदस्य बना।
- ~~~~ FATF की 2 सूची है।
- ग्रे लिस्ट (Grey list) :-
  ↳ ऐसे देश जिन्हें टेरर फंडिंग और मनी लॉन्ड्रिंग का समर्थन करने के लिए सुरक्षित आश्रय माना जाता है।
- काली सूची (Black List) :-
  गैर- सहकारी देश या क्षेत्र (NCCT) के रूप में जाने वाले देशों को यहाँ रखा गया है। ये देश आतंकी फंडिंग और मनी लॉन्ड्रिंग गतिविधियों का समर्थन करते हैं।

⇒ अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केन्द्र प्राधिकरण :-
(International financial Service Centre Authority (IFSCA)

→ IFSCA वित्तीय क्षेत्र के भीतर अंतर - नियामक (Inter - regulatory) समन्वय (coordination)

सुनिश्चित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केन्द्र प्राधिकरण अधिनियम, 2019 के तहत 2020 में स्थापित एक वैधानिक निकाय है।

→ मुख्यालय - गिफ्ट सिटी (Gift city) गाँधीनगर, गुजरात।

→ IFSCA की स्थापना से पहले घरेलू वित्तीय नियामकों, अर्थात RBI, SEBI, PFRDA और IRDAI ने IFSC में व्यवसाय को विनियमित किया।

→ IFSCA में वित्तीय उत्पादों (Financial products), वित्तीय सेवाओं (Financial services) और वित्तीय संस्थानों (Financial Institution) के विकास और विनियमन (Development and Regulation) के लिए एक एकीकृत प्राधिकरण है।

→ IFSCA का मुख्य उद्देश्य (to develop a strong global Connect and focus on the needs of the Indian Economy) एक मजबूत वैश्विक संपर्क विकसित करना और भारतीय अर्थव्यवस्था की जरूरतों पर ध्यान केन्द्रीत करने के साथ-साथ पूरे क्षेत्र और वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय मंच के रूप में काम करना है।